Methods of Educational Psychology

Dr. Shobha Gaur

Professar ,Department of Education

DDU Gorakhpur University , Gorakhpur

B.Ed First Year

Paper 2nd

प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है। विषय की प्रकृति के अनुसार ही उसकी विषयवस्तु एवंअध्ययन विधियाँ होती हैं। मनोविज्ञान भी एक पूर्ण विषय है। अतः मनोविज्ञान की भीअपनी स्वयं की विषयवस्तु एवं अध्ययन विधियाँ हैं। शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है।इसलिए शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन में भी मनोविज्ञान की विधियों को ही प्रयुक्त किया जाता है।

"मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है।"मानव व्यवहार का अध्ययन एक जटिल कार्य है क्योंकि इसे प्रभावित करने वाले अनेक कारक हैं। व्यक्ति कीइच्छाओं, आकांक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं, रुचियों आदि के साथ-साथ परिवेशगत परिस्थितियाँ उसके व्यवहार कोप्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानव व्यवहार को प्रभावित करने वाले इन सभी तत्वों में से कुछतत्वों को हम प्रत्यक्ष रूप से देख एवं

एवं समझ सकते हैं जबकि अनेक ऐसे तत्व भी होते हैं जिन्हें हम सामान्य रूपसे देख और जान नहीं सकते हैं। व्यवहार से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा किसी परिस्थिति (उरद्दीपक) के प्रति की गईप्रतिक्रिया से होता है। किन्तु अनेक बार ऐसा भी देखने में आता है कि जो व्यवहार या प्रतिक्रियाँ हम करते हैंवह हमारे व्यवहार का वास्तविक रूप नहीं होता है। इसका तात्पर्य यह है कि कुछ परिस्थितियों में हम वस्तुतःजो प्रतिक्रिया करना चाहते हैं उसके पीछे निहित भावना को छिपाते हुए कोई दूसरी प्रतिक्रिया करते हैं जो मूलभावना से मेल नहीं खाती है। इससे स्पष्ट है कि मानव व्यवहार का अध्ययन मात्र बाह्य-व्यवहार को देखकर नहींकिया जा सकता है अपितु इसके लिए व्यक्ति की उन आंतरिक भावनाओं का भी पता लगाना होगा जो उसके मन में छिपी होती है तथा उसके व्यवहार को प्रभावित करती है ।

मानव के व्यक्तित्व के आकलन हेतु उसके बाह्य व्यवहार के साथ-साथ उसकी आंतरिक भावनाओं का भी पता लगाना आवश्यक होता है । इसके लिए अलग-अलग परिस्थितियों में कुछ परीक्षण एवं निरीक्षण करने होते हैं यह परीक्षण और निरीक्षण ही मनोविज्ञान की अध्ययन विधियां हैं ।

सामान्य शब्दों में विधिया पद्धति का अर्थ कार्य करने के ढंग से है कार्य का सफल निष्पादन कार्य करने वाले की योग्यता एवं कौशल के साथ-साथ उपयुक्त विधि एवं उसे सही ढंग से लागू करने पर निर्भर होता है।

मानव व्यक्तित्व के सही-सही आकलन हेतु भी वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाए पता है इसके लिए भिन्न भिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति द्वारा किए जाने वाली विविध क्रियाओं का अध्ययन एवं सूक्ष्म निरीक्षण आवश्यक होता है अतः मनुष्य के बाह्य एवं आंतरिक भावनाओं के अध्ययन के लिए कुछ विशिष्ट विधियों का प्रयोग करते हैं ।

Methods of Educational Psychology

1. आत्मगत विधि (Subjective Method)
2. वस्तुगत विधि (Objective Method)

1 आत्मगत अथवा आत्मनिष्ठ विधि (Subjective Method)

- अंतर्दर्शन विधि
- अन्तरानुभवों की संचय विधि

2 वस्तुगत विधि (Objective Method)

- अवलोकन विधि (Observation Method)
- प्रश्नावली विधि (Questionnair Method)
- साक्षात्कार विधि (Interview Method)

- व्यक्ति इतिहास विधि (Case - history Method)
- प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)
- विकासात्मक विधि (Developmental Method)
- परीक्षण विधि (Test Method)
- सांख्यकी विधि (Statistical Method)
- जैविकीय विधि (Biological Method)
- मनोविश्लेषणात्मक विधि (Psycho-analytical Method)
- मनोभौतिकी विधि (Psycho –Physical Method)
- मनोविकृयात्मक विधि (Pathological Method)

शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन और शोध में भी उन्हीं विधियों एवं पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जिनसे प्राप्त परिणाम विश्वसनीय, विशुद्ध, वस्तुनिष्ठ, यथार्थपरक एवं निष्पक्ष हों। चूंकि शिक्षा-मनोविज्ञान केअध्ययन की विषयवस्तु मुख्यतः मानव-व्यवहार से सम्बन्धित होती है, अतः इसके अध्ययन की विधियों कोप्रमुख रूप से दो वर्गों में रखा जा सकता है।

(अ) आत्मगत या आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Methods)

(ब) वस्तुनिष्ठ विधियाँ (Objective Methods)

<u>आत्मगत विधियाँ</u>(Subjective Methods)

मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत व्यक्ति के व्यक्तित्व के सही आकलन हेतु उसके बाह्य व्यवहार के साथ-साथ उसकी अन्तरिक भावनाओं को भी जानना आवश्यक होता है। आंतरिक भावनाओं का सर्वोत्तम आकलनकर्ता स्वयं वह व्यक्ति ही हो सकता है। अतः शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन में आत्मगत विधियों का अपना महत्व है।

आत्मगत विधि के अंतर्गत दो विधियां आती हैं ।

1. **अंतर्दर्शन विधि** (**Introspection Method**)
2. **अन्तरानुभवों का संचय** (**Ancedotal Method**)

<u>अन्तर्दर्शन विधि</u> (**<u>Introspection Method</u>**)

अन्तर्दर्शन मनोविज्ञान की परम्परागत विधि है। यह अति प्राचीन एवं दार्शनिक पदधति है। अन्तर्दर्शन काअर्थ व्यक्ति दवारा स्वय अपने अतर्मन का निरीक्षण, अवलोकन एव विश्लेषण करना है। इसके अतर्गत व्यक्तिकिसी कार्य या घटना के प्रति अपनी क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं का अपने ही अतःकरण में विश्लेषण करके किसीनिष्मक्ष निर्णय पर पहचता है। इसीलिए इसे आत्मनिरीक्षण या आत्मवलोकन विधि भी कहा जाता है। इस विधिमें व्यक्ति की मानसिक क्रियाएँ आत्मगत होती हैं तथा इसका मुख्य आधार आत्मचिन्तन होता है।

स्टाउट केअनुसार, "अन्तर्दर्शन करना अपने ही मस्तिष्क के कार्य का क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन करना है।"

Tointrospect is to attend to the working of one's own mind in a systematic manner.-Stout

महान दार्शनिक लॉक (Locke) ने अन्तर्दर्शन को 'मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण माना है ।

Introspection means notice which the mind takes of its own operations. - L*ocke*

इस प्रकार अंतर्दर्शन का अर्थ अपने आप मे देखना (To look within or looking inwards अथवा आत्मावलोकन Selfobservation है ।

<u>अंतर्दर्शन की प्रक्रिया</u> (<u>Process of Introspection</u>)

1. सर्वप्रथम व्यक्ति बाह्य जगत की वस्तुओं को देखता है ।
2. बाह्य जगत की वस्तुओं एवं घटनाओं के प्रति व्यक्ति के मन मे किसी न किसी प्रकार की प्रतिक्रिया होती है ।
3. व्यक्ति स्वतंत्ररूप से अपनी मानसिक क्रियाओं के विषय में चिंतन करता है तथा विश्लेषण करता है कि कोई कार्य उसने क्यों किया ।
4. चिंतन एवं विश्लेषण से मन की वृतियों में द्वन्द होता है । इस द्वन्द का एक पक्ष हमारे जीवन मूल्य ,सामाजिक मान्यताएं एवं मन की नैसर्गिक

प्रवृत्तियाँ होते हैं तथा दूसरा पक्ष-व्यक्ति द्वारा किये गये कार्यया प्रतिक्रिया से सम्बध्धित विभिन्न पहलु । इस द्वन्द्व में जो पक्ष विजयी होता है, उसी के अनुरूप व्यक्तिकी आगे की क्रियाएँ संचालित होती हैं।

5. व्यक्ति अपनी कमजोरियों को पहचानता है तथा अपनी मानसिक क्रियाओं के सुधार के सम्बन्ध मेंप्रयास करता है ।

अन्तर्दर्शन के आवश्यक तत्व (Essential Elements of Introspection)

अन्तर्दर्शन की प्रक्रिया की दृष्टि से इसके आवश्यक तत्व इस प्रकार हैं-

(i) बाह्य दृश्य अथवा घटना

(ii) सामाजिक मूल्य एवं मान्यताएँ

(iii) जीवन मूल्य

(iv) मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ(v) सत्य-असत्य एवं सही-गलत की अनुभूति

(vi) विवेकपूर्ण निर्णय की बौद्धिक क्षमता

अन्तर्दर्शन विधि का महत्व (Importance of Introspection Method)

अन्तर्दर्शन एक दार्शनिक पद्धति है प्राचीनकाल से ही दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक अपनी मानसिक क्रियाओंऔर प्रतिक्रियाओं का ज्ञान इसी विधि से प्राप्त करते रहे हैं। इस विधि के अंतर्गत वे अपनी भावनाओं का आकलनतथा अनुभवों का पुनः स्मरण करते थे।

- इसके माध्यम से वे अपनी सांवेगिक स्थितियों एवं मानसिक दशाओं कानिरीक्षण एव विश्लेषण करके स्वय से ही सही मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। इस प्रकार इस विधि का पारम्परिकउपयोग एव महत्व है। इस विधि का अपने आपको जानने- समझने, पूर्व-अनुभवों का लाभ उठाने तथा दूसरे कीमानसिक क्रियाओं का अनुमान लगाने में विशेष महत्व है ।

अंतर्दर्शन विधि की विशेषताएं

- **स्वयं को समझने में सहायक**
- **प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं**
- **वास्तविक एवं सत्य जानकारी की निकटता**
- **समय की सुविधा**
- **अधिक उपयोगी**
- **बाह्य हस्तक्षेप की संभावना नहीं**

अंतर्दर्शन विधि की कमियां

- आत्मनिष्ठता
- वैज्ञानिकता का अभाव
- मन द्वारा मन का निरीक्षण असम्भव
- सही निरीक्षण सम्भव नहीं
- ध्यान का विभाजन
- सभी प्रकार के व्यक्तियों पर प्रयोग सम्भव नहीं
- बाह्य तत्वों द्वारा ध्यानाकर्षण
- निश्चित निष्कर्ष की संभावना कम

References

- Chauhan Reeta (2018), Childhood and Growing up,Agrawal Publication,Agra
- PalS.K (2015),Adhikansh ka vikas evm Shikshan Adhigam Prakriya, New Kailash Prakashan,Allahabad
- PalS.K (2010), Shiksha Manovigyan, New Kailash Prakashan Allahabad
- Pathak R.P(2008),Uchch Shiksha Manovigyan,Paresan ,Delhi

- **Saraswat** M (**2013**), **Shiksha Manovigyan ki Rooprekha**,**Alok Prakashan, Lucknow, Allahabad**
- **Yadav S.R (2008),Adhigam karta ka vikas evm shikshan adhigam Prakriya, Sharda Pustak Bhavan , Allahabad**

धन्यवाद